सुभद्रा कुमारी चौहान

जन्म	:	16 अगस्त 1904 ।
निधन	:	15 फरवरी 1948, बसंत पंचमी के दिन नागपुर से जबलपुर वापसी में कार दुर्घटना में ।
जन्म-स्थान	:	निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश ।
माता-पिता	:	श्रीमती धिराज कुँवर एवं ठाकुर रामनाथ सिंह ।
पति	:	ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान, खंडवा, मध्य प्रदेश निवासी से 1919 में विवाह । ठाकुर लक्ष्मण सिंह अंग्रेज सरकार द्वारा जब्त 'कुली प्रथा' और 'गुलामी का नशा' नामक नाटकों के लेखक, प्रसिद्ध पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी और काँग्रेसी नेता थे ।
शिक्षा	:	क्रास्थवेट गर्ल्स स्कूल, इलाहाबाद में प्रारंभिक शिक्षा । इसी स्कूल में प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ थीं । पुनः थियोसोफिकल स्कूल, वाराणसी में वर्ग 9 तक की पढ़ाई के बाद शिक्षा अधूरी छोड़कर असहयोग आंदोलन में कूद पड़ीं ।
प्रधान कर्मक्षेत्र	:	समाज सेवा, राजनीति, स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय भागीदारी, अनेक बार कारावास, मध्य प्रदेश में काँग्रेस पार्टी की एम. एल. ए. ।
विशिष्ट अभिरुचि	:	छात्र जीवन से ही काव्य रचना की प्रवृत्ति, आगे चलकर प्रमुख कवयित्री एवं साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठा ।
कृतियाँ	:	'मुकुल' (कविता संग्रह, 1930), त्रिधारा (कविता चयन), बिखरे मोती (कहानी संग्रह), सभा के खेल (कहानी संग्रह) ।
पुरस्कार	:	'मुकुल' पर 1930 में 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' का 'सेकसरिया पुरस्कार' ।

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी की छायावादी काव्यधारा के समानांतर स्वतंत्र रूप से काव्यरचना करने वाली राष्ट्रीय भाव धारा की प्रमुख और विशिष्ट कवयित्री थीं । राष्ट्रीय भावधारा का भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से अभिन्न संबंध था । इस भावधारा का उन्मेष भारतेंदु युग में ही हुआ था । द्विवेदी युग में इसका विकास हुआ तथा उसके बाद के युगों में यह भावधारा अनेक दिशाओं में फैलती हुई व्यापक और बहुमुखी होकर उत्कर्ष पर पहुँच गई । स्वतंत्रता आंदोलन, सांस्कृतिक जागरण और सामाजिक सुधार एवं परिवर्तन की व्यापक चेतना के साथ यह भावधारा उत्तरोत्तर गहरी, एकाग्र और उन्मुख होती गई । इसके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आशय निखरते और स्पष्ट होते गए । उनमें एक दृढ़ता, जनतांत्रिक वैचारिकता और उत्सर्ग भावना बढ़ती चली गई । केवल भावुकता की उच्छल अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर तथा स्वप्नों-संकल्पों से कहीं अधिक, इस भावधारा में सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ की प्रेरणाएँ और आग्रह बढ़ते चले गए । राष्ट्रीय भावधारा के इस यथार्थोन्मुख रूप से सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का घनिष्ठ संबंध है । उनकी कविता की केंद्रीय और प्रमुख प्रेरणा यथार्थनिष्ठ राष्ट्रीय भावधारा ही है ।

सुभद्रा कुमारी चौहान के निजी, पारिवारिक, सामाजिक-राजनीतिक और सार्वभौम मानववादी भाव-पटलों एवं जीवन-रूपों की एक ही मूल-प्रेरणा, एक ही लक्ष्य और एक ही रंग दिखलाई पड़ता है–राष्ट्रीय स्वतंत्रता । इसी का अकृत्रिम या स्वाभाविक आवेगमय स्वर उनके जीवन और काव्य को मुखर रूप में एक और अखंड कर देता है । यह गुण या विशेषता उन्हें अपने समकालीन कवियों के बीच विशिष्ट बनाती है । क्रांतिकारी युवाओं की तरह राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व होम कर देने तथा मर-मिट जाने का एक ही मंत्र, एक ही बल और एक ही सर्वग्रासी प्रेरणा उनके जीवन और काव्य के अविलग-अखंड संसार से बवंडर या आँधी की तरह उठती है और चारों ओर जैसे छा जाती है । चिंतक कवि मुक्तिबोध ने उचित कहा है कि ''सुभद्रा जी के साहित्य में अपने युग के मूल उद्वेग, उसके भिन्न-भिन्न रूप, अपनी आभरणहीन प्रकृत शैली में प्रकट हुए हैं ।''

सुभद्रा जी के प्रतिनिधि काव्य संकलन 'मुकुल' से यहाँ ली गई प्रस्तुत कविता निराला की 'सरोज स्मृति' के बाद हिंदी में एक दूसरी शोकगीति है जो पुत्र के असामयिक निधन के बाद कवयित्री माँ के द्वारा लिखी गई है । स्वभावत: 'सरोज स्मृति' की तरह लंबी न होने तथा घटनामूलक कथा संदर्भों के अभाव के कारण इस शोकगीति में व्यापक यथार्थ संदर्भ नहीं हैं ; किंतु पुत्र के असमय निधन के बाद पीछे तड़पते रह गए माँ के हृदय के निदारुण शोक की ऐसी सादगी भरी अभिव्यक्ति है जो निर्वैयक्तिक और सार्वभौम होकर अमिट रूप में काव्यत्व अर्जित कर लेती है । इसमें एक माँ के विषादमय शोक का एक साथ धीरे-धीरे गहराता और ऊपर-ऊपर आरोहण करता हुआ भाव उत्कटता अर्जित करता जाता है तथा कविता के अंतिम छंद में पारिवारिक रिश्तों के बीच माँ-बेटे के संबंध की एक विलक्षण आत्म-प्रतीति में स्थाई परिणति पाता है ।

''तेरा स्मारक तू ही होगी
तू खुद अमिट निशानी थी......''

◆ ◆ ◆

"हम उनके असली स्वरूप को याद रखें कि वह हमारी भावना के भारत की 'पहली बसंतपंचमी' – भारतीय आंदोलन की वीर स्त्रियों में पहली सत्याग्रही–और हिंदी भारती की पहली कोकिला थीं, जिनकी स्वर-लहरियाँ 'चकबस्त' और 'इकबाल' के राष्ट्रीय तरानों के साथ हमेशा-हमेशा के लिए जन-गन-मन में घुल-मिल गई हैं ।"

– शमशेर बहादुर सिंह

पुत्र वियोग

आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लास विश्व पर छाया,
मेरा खोया हुआ खिलौना
अब तक मेरे पास न आया ।

शीत न लग जाए, इस भय से
नहीं गोद से जिसे उतारा
छोड़ काम दौड़ कर आई
'मा' कहकर जिस समय पुकारा ।

थपकी दे दे जिसे सुलाया
जिसके लिए लोरियाँ गाईं,
जिसके मुख पर जरा मलिनता
देख आँख में रात बिताई ।

जिसके लिए भूल अपनापन
पत्थर को भी देव बनाया
कहीं नारियल, दूध, बताशे
कहीं चढ़ाकर शीश नवाया ।

फिर भी कोई कुछ न कर सका
छिन ही गया खिलौना मेरा
मैं असहाय विवश बैठी ही
रही उठ गया छौना मेरा ।

तड़प रहे हैं विकल प्राण ये
मुझको पल भर शांति नहीं है
वह खोया धन पा न सकूँगी
इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है ।

फिर भी रोता ही रहता है
नहीं मानता है मन मेरा
बड़ा जटिल नीरस लगता है
सूना सूना जीवन मेरा ।

यह लगता है एक बार यदि
पल भर को उसको पा जाती
जी से लगा प्यार से सर
सहला सहला उसको समझाती ।

मेरे भैया मेरे बेटे अब
माँ को यों छोड़ न जाना
बड़ा कठिन है बेटा खोकर
माँ को अपना मन समझाना ।

भाई-बहिन भूल सकते हैं
पिता भले ही तुम्हें भुलावे
किंतु रात-दिन की साथिन माँ
कैसे अपना मन समझावे !

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवयित्री का 'खिलौना' क्या है ?
2. कवयित्री स्वयं को असहाय और विवश क्यों कहती हैं ?
3. पुत्र के लिए माँ क्या-क्या करती है ?
4. अर्थ स्पष्ट करें –

   आज दिशाएँ भी हँसती हैं
   है उल्लास विश्व पर छाया,
   मेरा खोया हुआ खिलौना
   अब तक मेरे पास न आया ।

5. माँ के लिए अपना मन समझाना कब कठिन है और क्यों ?
6. पुत्र को 'छौना' कहने में क्या भाव छुपा है, उसे उद्घाटित करें।
7. मर्म उद्घाटित करें –

   भाई बहिन भूल सकते हैं
   पिता भले ही तुम्हें भुलावे
   किंतु रात-दिन की साथिन माँ
   कैसे अपना मन समझावे !

8. कविता का भावार्थ संक्षेप में लिखिए।
9. इस कविता को पढ़ने पर आपके मन पर क्या प्रभाव पड़ा, उसे लिखिए।

कविता के आस-पास

1. सुभद्रा जी ने कहानियाँ भी लिखी हैं, इनकी कहानियों को उपलब्ध कर पढ़ें।
2. प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु पर 'सरोज स्मृति' शीर्षक से एक अत्यंत मार्मिक शोकगीति लिखी थी। निराला की इस रचना को उपलब्ध करें, अपनी कक्षा में इसका पाठ करें और इस पर अपने मित्रों व शिक्षक से चर्चा करें।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान ने वीर रस की अनेक कविताएँ लिखी हैं, दिगंत (भाग – 1) में 'आँखों देखा गदर' पाठ के अभ्यास में उनकी कविता दी गई है। आप उसे भी पढ़ें, इसके अतिरिक्त सुभद्रा जी ने वात्सल्य और प्रेमपरक अनेक कविताएँ लिखी हैं। राष्ट्रीय भावधारा से संबंधित उनकी एक कविता यहाँ दी जा रही है –इसका भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

जलियाँवाले बाग में वसंत

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते।
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते॥
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक कुल से।
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे॥

परिमल हीन पराग दाग सा बना पड़ा है।
हाँ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है॥
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।
यह है शोक स्थान यहाँ मत शोर मचाना॥

वायु चले पर मंद चाल से उसे चलाना।
दुख को आहें संग उड़ाकर मत ले जाना॥
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे।
भ्रमर करे गुंजार, कष्ट की कथा सुनावे॥

लाना संग में पुष्प, न हो वे अधिक सजीले।
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले॥
किंतु न तुम उपहार भाव आकर दरसाना।
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना॥

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खाकर ।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर ॥
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं ।
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं ॥

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना ।
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना ॥
तड़प-तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर ।
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर ॥

यह सब करना, किंतु
बहुत धीरे से आना ।
यह है शोक स्थान
यहाँ मत शोर मचाना ॥

4. आप अपनी ओर से रिक्त पंक्तियों को पूरा करें –

(क) आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लास विश्व पर छाया
....
....

(ख) मेरे भैया, मेरे बेटे, अब
माँ को यों छोड़ न जाना
....
....

भाषा की बात

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यभाषा पर एक टिप्पणी लिखें ।
2. कविता से सर्वनाम पदों को चुनें ।
3. 'मलिनता' में 'ता' प्रत्यय है, 'ता' प्रत्यय के योग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
4. इनके विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   मलिनता, देव, असहाय, जटिल, नीरस, कठिन, विकल
5. वाक्य प्रयोग द्वारा इन मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करें –
   (क) आँखों में रात बिताना (ख) शीश नवाना
6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखें –
   गोद, छौना, बहन, विश्व, दूध
7. 'उल्लास' का संधि-विच्छेद करें ।

शब्द निधि

छौना : बेटा, हिरण आदि पशु का छोटा बच्चा, शावक